IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

हिंदी भाषा की पाठयपुस्तक की समीक्षा के सैद्धांतिक तत्व

1.गीता शुक्ला

पी.एच.डी. शोधार्थी

आर्यभट्ट ज्ञान विश्वविद्यालय, पटना, बिहार

स्कूल ऑफ़ एजुकेशनल ट्रेनिंग एंड रिसर्च

2. डॉ. बंदना कुमारी

प्राचार्या हरि नारायण सिंह इंस्टिट्यूट ऑफ़ टीचर्स एजुकेशन , सासाराम, बिहार

शोध सारांश

किसी भी पाठ्यपुस्तक की समीक्षा उस पुस्तक की सामग्री के गहन, आलोचनात्मक और व्यवस्थित विश्लेषण पर टिकी होती है। पाठ्यपुस्तक की समीक्षा का उद्देश्य केवल संबंधित सूचनाओं को सूचीबद्ध करना मात्र नहीं है, अपितु यह एक विश्लेषणात्मक एवं संश्लेषणात्मक प्रक्रिया है जिसके माध्यम से शोधकर्ता अपने विषय से संबंधित मौजूदा ज्ञान की संरचना और सीमाओं का आकलन करता है, विभिन्न वैचारिक ढाँचों को समझता है, और सबसे महत्वपूर्ण, उन अंतरालों की सटीक पहचान करता है जिन्हें भविष्य में सुधार करना आवश्यक है | प्रस्तुत अध्ययन, जो पाठयपुस्तक समीक्षा के सैद्धांतिक तत्वों के संदर्भ में एक व्यापक विश्लेषण करता है, एक अत्यंत जटिल और बहुआयामी विषय है। अतः, इसके विभिन्न आयामों—पाठ्यपुस्तक मूल्यांकन के मानदंड, देवनागरी लिपि की विशिष्ट शिक्षाशास्त्रीय चुनौतियाँ, और पाठ्यपुस्तकों में समावेशी प्रतिनिधित्व—पर एक व्यापक और व्यवस्थित दृष्टिकोण अपनाना अनिवार्य हो जाता है। प्रस्तुत शोधपत्र में इन्हीं मानदंडों का अध्ययन, विश्लेषण किया गया है |

शोध –पत्र

एक पारंपरिक विवरणात्मक पाठ्यपुस्तक की समीक्षा के स्थान पर **व्यवस्थित समीक्षा** को पारदर्शी कार्यप्रणाली माना जाता है। यह दृष्टिकोण इसलिए महत्त्वपूर्ण है क्योंकि यह पूर्वाग्रह को कम करता है और एक स्पष्ट, दोहराने योग्य प्रक्रिया के माध्यम से निष्कर्षों की वैधता को बढ़ाता है। इसका उद्देश्य एक स्पष्ट रूप से परिभाषित शोध प्रश्न का उत्तर देने के लिए सभी प्रासंगिक और उच्च-गुणवत्ता वाले शोध साक्ष्यों को व्यवस्थित रूप से खोजना, उनका समालोचनात्मक मूल्यांकन करना और उन्हें संश्लेषित करना है। इस प्रकार की समीक्षा का मुख्य उद्देश्य केंद्रीय प्रश्नों का समाधान खोजना होता है :

1. छात्रों को पाठ्यपुस्तक के द्वारा जो सिखाना है उसे सैद्धांतिक रूप से कैसे परिभाषित किया गया है, इस पर क्या बहसें हैं, और राष्ट्रीय शैक्षिक नीतियों में इसे किस प्रकार एकीकृत किया गया है?
2. हिंदी भाषा की पाठ्यपुस्तकों के मूल्यांकन के लिए अकादमिक साहित्य में कौन-से विस्तृत मानदंड और विधियाँ प्रस्तावित की गई हैं, और इन मूल्यांकनों के सामान्य निष्कर्ष क्या रहे हैं?
3. देवनागरी लिपि की विशिष्ट संरचनात्मक और दृश्य विशेषताएँ प्रारंभिक शिक्षार्थियों के लिए क्या अद्वितीय संज्ञानात्मक चुनौतियाँ प्रस्तुत करती हैं, और शिक्षाशास्त्र में इन चुनौतियों को संबोधित करने के लिए क्या साक्ष्य-आधारित रणनीतियाँ सुझाई गई हैं?
4. हिंदी की पाठ्यपुस्तकों में समावेशन, सांस्कृतिक संवेदनशीलता और लैंगिक प्रतिनिधित्व की वर्तमान स्थिति पर मौजूदा शोध क्या कहता है, और इसके सामाजिक-शैक्षिक निहितार्थ क्या हैं?

इस प्रकार पाठ्यपुस्तकें शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया का एक केंद्रीय और सबसे प्रभावशाली उपकरण होती हैं, और उनकी गुणवत्ता सीधे तौर पर निर्धारित सीखने के प्रतिफल की प्राप्ति को प्रभावित करती है। व्यवस्थित समीक्षा से यह स्पष्ट होता है कि पाठ्यपुस्तकों का मूल्यांकन एक जटिल और बहुआयामी प्रक्रिया है जिसके लिए अकादमिक साहित्य में कई मानदंड स्थापित किये गए हैं |

समावेशन मानदंड (Inclusion Criteria): वे अध्ययन जो कक्षा के संदर्भ में भाषा सीखने के प्रतिफल पर केंद्रित हों ; जो विशेष रूप से हिंदी पाठ्यपुस्तकों के विश्लेषण या मूल्यांकन से संबंधित हों ; जो देवनागरी लिपि के शिक्षाशास्त्र पर महत्वपूर्ण चर्चा करते हों ; और जो भारत के शैक्षिक संदर्भ में हो ताकि निष्कर्ष प्रासंगिक हों।

अपवर्जन मानदंड (Exclusion Criteria): वे अध्ययन जो उच्च शिक्षा या माध्यमिक स्तर से संबंधित हों, जो हिंदी के अलावा अन्य भारतीय या विदेशी भाषाओं पर भी केंद्रित हों, उसे शामिल करना चाहिए | केवल राय-आधारित लेख, ब्लॉग पोस्ट, विश्लेषण या अव्यावहारिक तथ्य पर आधारित तथ्यों को जिनमें कोई अनुभवजन्य डेटा या वैचारिक विश्लेषण नहीं हो उसे पाठ्यपुस्तक विश्लेषण में शामिल नहीं करना चाहिए |

गुणवत्ता मूल्यांकन (Quality Appraisal): पाठयपुस्तकों की गुणवत्ता का समालोचनात्मक मूल्यांकन होना चाहिए। प्रत्येक अध्ययन को उसकी पद्धतिगत विशेषताएं (जैसे, स्पष्ट शोध प्रश्न, उपयुक्त कार्यप्रणाली, पारदर्शी डेटा विश्लेषण), वैचारिक स्पष्टता, और प्रस्तुत साक्ष्यों की प्रासंगिकता और मजबूती के आधार पर परखा जाना चाहिए। ।

डेटा निष्कर्षण एवं संश्लेषण (Data Extraction and Synthesis): प्रत्येक चयनित मानदंड से प्रासंगिक जानकारी—जैसे उद्देश्य, प्रयुक्त कार्यप्रणाली, विवरण, प्रमुख निष्कर्ष, और सीमाओं—को एक मानकीकृत डेटा निष्कर्षण प्रारूप में व्यवस्थित किया जाता है। इसके बाद, इन निष्कर्षों को विषयगत विश्लेषण पद्धति का उपयोग करके संश्लेषित किया जाता है। इस प्रक्रिया में समान निष्कर्षों को एक साथ समूहित करना, उनके बीच संबंधों की पहचान करना और प्रमुख विषयों और प्रतिरूपों विकसित करना जो शोध प्रश्नों का सटीक उत्तर देते हैं।

देवनागरी लिपि की विशिष्ट शिक्षाशास्त्रीय चुनौतियाँ

देवनागरी लिपि, जिसमें हिंदी लिखी जाती है, अपनी संरचना में अद्वितीय है और प्रारंभिक शिक्षार्थियों के लिए विशिष्ट अवसर और चुनौतियाँ दोनों प्रस्तुत करती है। यह एक आक्षरिक या अल्फासिलेबरी लिपि है, जहाँ प्रत्येक मूल प्रतीक (अक्षर) एक व्यंजन और एक अंतर्निहित स्वर ('अ') के संयोजन का प्रतिनिधित्व करता है। यद्यपि यह वर्तनी की दृष्टि से काफी हद तक पारदर्शी है (अर्थात् ध्वनि और प्रतीक के बीच एक सुसंगत संबंध है), इसकी दृश्य जटिलता) प्रारंभिक शिक्षार्थियों के लिए एक महत्वपूर्ण संज्ञानात्मक भार प्रस्तुत करती है।

विभिन्न शोधों से पता चलता है कि देवनागरी की कई विशेषताएँ, जैसे कि समान दिखने वाले अक्षर (उदाहरण के लिए, 'भ' और 'म', या 'न' और 'व'), मात्राओं की गैर-रैखिक स्थिति (व्यंजन के ऊपर, नीचे, पहले या बाद में लगना), और संयुक्ताक्षरों की जटिल संरचना, प्रारंभिक पठन प्रवाह के विकास को अंग्रेजी जैसी वर्णमाला-आधारित लिपियों की तुलना में धीमा कर सकती हैं । तंत्रिका-विज्ञान संबंधी अध्ययनों ने भी यह दर्शाया है कि देवनागरी को संसाधित करते समय मस्तिष्क के दाएँ गोलार्ध की अधिक सक्रियता होती है, जो इसकी उच्च दृश्य-स्थानिक मांगों को इंगित करता है |

इन चुनौतियों के गंभीर शिक्षाशास्त्रीय निहितार्थ हैं। इसका सीधा अर्थ यह है हिंदी की पाठ्यपुस्तकों और शिक्षण रणनीतियों को केवल ध्वनि-प्रतीक संबंध पर ही नहीं, बल्कि अक्षरों की दृश्य पहचान, शब्दांश-आधारित डिकोडिंग और स्थानिक धारणा पर भी विशेष और स्पष्ट ध्यान देना चाहिए। बाजरे और खान (2019) का महत्वपूर्ण अध्ययन इस बात का समर्थन करता है कि डिस्लेक्सिया वाले बच्चों के लिए शब्दांश-आधारित विभाजन,ध्वनि-आधारित विभाजन की तुलना में आसान होता है। यह इस बात पर प्रकाश डालता है कि प्रारंभिक शिक्षण में शब्दांश-स्तर के कार्यों को प्राथमिकता दी जानी चाहिए, एक ऐसी रणनीति जिसे अक्सर वर्तमान पाठ्यपुस्तकों में उपेक्षित किया जाता है।

पाठ्यपुस्तकों में समावेशन, संस्कृति एवं लैंगिक प्रतिनिधित्व

पाठ्यपुस्तकें केवल तटस्थ ज्ञान का वाहक नहीं होतीं, बल्कि वे सामाजिक मूल्यों, मानदंडों, पहचान और विश्व-दृष्टि को आकार देने का भी एक शक्तिशाली और अवचेतन माध्यम होती हैं। इस संबंध में की गई व्यवस्थित समीक्षा भारतीय पाठ्यपुस्तकों में प्रतिनिधित्व को लेकर कुछ गहरी और चिंताजनक प्रवृत्तियों को उजागर करती है।

लैंगिक प्रतिनिधित्व: भारत के संदर्भ में किए गए कई अध्ययनों से यह पता चलता है कि प्राथमिक स्तर की पाठ्यपुस्तकों में लैंगिक रूढ़िवादिता व्यापक रूप से और व्यवस्थित रूप से मौजूद है। महिलाओं और लड़कियों का प्रतिनिधित्व अक्सर कम होता है, और जब उन्हें चित्रित किया भी जाता है, तो उन्हें पारंपरिक, घरेलू और निष्क्रिय भूमिकाओं (जैसे माँ, बहन, गृहिणी) में दिखाया जाता है, जबकि पुरुष और लड़के सार्वजनिक, व्यावसायिक और सक्रिय भूमिकाओं में हावी रहते हैं (Nandi, Halder, & Das, 2024)। यह न केवल लड़कियों की आकांक्षाओं को सीमित करता है, बल्कि लड़कों के मन में भी लिंग के बारे में संकीर्ण धारणाओं को मजबूत करता है।

सांस्कृतिक और क्षेत्रीय प्रतिनिधित्व: पाठ्यपुस्तकों में अक्सर एक मानकीकृत, शहरी, और मुख्यधारा की उत्तर भारतीय संस्कृति का चित्रण होता है, जिसमें क्षेत्रीय, जनजातीय, और अल्पसंख्यक संस्कृतियों का प्रतिनिधित्व या तो नगण्य होता है या फिर उसे विदेशी और विचित्र रूप में प्रस्तुत किया जाता है। यह उन बच्चों को अपनी स्थानीय संस्कृति और पहचान से अलग-थलग कर सकता है जिनकी जीवनशैली पाठ्यपुस्तक की दुनिया से मेल नहीं खाती (Childlore, 2020)।

समावेशन का प्रतिनिधित्व: हाशिए पर पड़े समूहों, जैसे कि दलित, आदिवासी, धार्मिक अल्पसंख्यक, या विकलांग व्यक्तियों का प्रतिनिधित्व पाठ्यपुस्तकों में लगभग न के बराबर होता है (Kadri, 2022)। उनकी कहानियों, उनके नायकों और उनके योगदानों की अनुपस्थिति एक 'प्रतीकात्मक क्षय ' का कार्य करती है। यूनेस्को (2020) इस बात पर जोर देता है कि पाठ्यपुस्तकों में विविध पात्रों का सकारात्मक और सम्मानजनक समावेश बच्चों में सहानुभूति, पारस्परिक सम्मान और स्वीकृति को बढ़ावा देता है और समाज में मौजूद पूर्वाग्रहों को चुनौती देने में मदद करता है।

इस प्रकार पाठ्यपुस्तक विश्लेषण में समेकित दृष्टिकोण अपनाना व्यावहारिक है | पाठयपुस्तक कि समीक्षा के लिए सामग्री के पाठ्यक्रम के साथ संरेखण और मूल्यों एवं तथ्यों के प्रतिनिधित्व के बिन्दुओं पर एक समग्र और एकीकृत विश्लेषण ढाँचा अपनाना हितकर है , जिसमें सीखने के मूल्यांकन के साथ संरेखण, शिक्षाशास्त्रीय डिजाइन, दृश्य साक्षरता, संज्ञानात्मक भार, और समावेशी प्रतिनिधित्व जैसे सभी महत्वपूर्ण पहलुओं का एक साथ मूल्यांकन, विश्लेषण किया गया हो।

इन तथ्यों को ध्यान में रखकर यदि समीक्षा की जाए हिंदी पाठ्यपुस्तकों का एक समग्र और बहुआयामी विश्लेषण प्रस्तुत होगा, जो न केवल सीखने के प्रतिफल के साथ उनके संरेखण का मूल्यांकन करेगा, बल्कि उनके शिक्षाशास्त्रीय डिजाइन, दृश्य गुणवत्ता और समावेशी प्रतिनिधित्व का भी गंभीर रूप से विश्लेषण संभव है , जिससे इस महत्वपूर्ण क्षेत्र में एक सार्थक और साक्ष्य-आधारित गुणवत्ता से परिपूर्ण कार्य हो सके |

संदर्भ ग्रंथ सूची

- Bajre, P., & Khan, A. (2019). Syllable processing in Hindi-speaking children with and without dyslexia. *Annals of Dyslexia, 69*(3), 389–406. https://doi.org/10.1007/s11881-019-00183-6.
- Kadri, R. (2022). *Representation of Marginalized Communities in Indian School Textbooks*. Centre for Social Justice and Equity.
- Nag, S. (2007). Early reading in Kannada: The pace of acquisition of orthographic knowledge and phonemic awareness. *Journal of Research in Reading, 30*(1), 7-22. https://doi.org/10.1111/j.1467-9817.2006.00321.x
- Nandi, A., Halder, S., & Das, S. (2024). Gender on the page: A critical analysis of female representation in primary school textbooks in West Bengal. *Contemporary Education Dialogue, 21*(1), 1-25. https://doi.org/10.1177/09731849231206532
- Rao, C., Vaid, J., & Srinivasan, N. (2012). Orthography and the brain: A review of neuroimaging studies of reading in Devanagari. *International Journal of Mind, Brain, and Cognition, 3*(2), 299-318.
- UNESCO. (2020). *Global Education Monitoring Report 2020: Inclusion and education: All means all*. UNESCO. https://gem-report-2020.unesco.org/
- Woolfolk, A., & Usher, E. L. (2023). *Educational Psychology* (15th ed.). Pearson.